शोध आलेख सारांश –

प्रस्तुत शोध पत्र में कौटिल्य के आर्थिक विचारों का वर्तमान व्यवस्था के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

संकेतक

कौटिल्य, आर्थिक विचार, करारोपण, कृषि, अर्थशास्त्र, सार्वजनिक व्यय।

प्राचीन भारतीय आर्थिक दर्शन का अध्ययन, मनन, चिन्तन आवश्यक है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की वर्तमान नीतियों का उत्सर्ग उसकी प्राचीनकालिक संस्थाओं में ही निहित है इस प्रकार राष्ट्रीयता को ध्यान रखकर हमें अपने प्राचीन नीतियों पर ही वर्तमान की आधारशिला रखनी होगी। हमारा वर्तमान अपने मूल से जुड़कर ही पुष्पित और पल्लवित होगा।इस प्रकार का अध्ययन निश्चित रूप से हमारे भूतकाल के सम्बन्ध में व्याप्त भ्रम कि प्राचीन भारत में आर्थिक विकासशीलता का अभाव था, को दूर करेगा।[1]

कौटिल्य का जन्म लगभग 400 ईसा पूर्व भारत की प्राचीन ऐतिहासिक नगरी तक्षशिला में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ऐतिहासिक शोधों के अनुसार 632 –372 ई0 पूर्व मगध में प्रतापी सम्राट महापद्मनन्न थे उनके द्वारा भरी सभा में कौटिल्य का अपमान किया गया जिससे कुपित होकर उन्होंने नन्दवंश के समूल नाश की प्रतिज्ञा की। राजा नन्द का समूल नाश कर चन्द्रगुप्त मौर्य को सिंहासनासीत किया।

कौटिल्य के अनुसार जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ और काम है मौर्य साम्राज्य में उच्च स्थान पाते हुए भी गंगा तट पर पर्ण कुटी बना त्यागी एवम् सन्यासी सा जीवन व्यतीत किया। यही अपने अर्थशास्त्र की रचना की।

कौटिल्य की महान रचना अर्थशास्त्र है इस रचना के सम्बन्ध में कौटिल्य प्रारम्भ में ही कहते हैं "पृथ्वी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए पुरातन आचार्यो ने जितने भी अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थों का निर्माण किया उन सबका सार संकलन कर प्रस्तुत अर्थशास्त्र की रचना की गई।"[2] कौटिल्य ने अपनी रचना में पूर्ववर्ती लगभग अठ्ठारह उन्नीस अर्थशास्त्र विद् (मनु, भीष्म पितामह, शुक्र आदि) आचार्यो का उल्लेख किया है जिनसे विचार ग्रहण कर उन्होंने अपने अद ्भुत ग्रन्थ का निर्माण किया है पुरातन आचार्य परम्परा के परिचय से प्रतीत होता है कि अर्थशास्त्र का निर्माण बहुत पहले से होने लगा था जिसकी वृहद् एवम् व्यापक व्याख्या हम कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पाते हैं। अतः आचार्य कौटिल्य को विश्व के महान् अर्थशास्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ सर्वोच्च स्थान आर्थिक विचारक और चिन्तन के रूप में विभूषित करना ही यथार्थ है।कौटिल्य के अर्थशास्त्र का प्रमुख विषय राजनीति है इसमें 15 अधिकरण, 180 प्रकरण एवम् छः हजार श्लोक है जिसके अन्तर्गत राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, इंजीनियरिंग विद्या आदि अनेकों विषय पर प्रकाश डाला गया है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र अर्थ, दर्शन एवम् राजनीति का अद ्भुत समन्वय है। सभी राजनीतिक एवम् आर्थिक क्रियाकलाप नीति सम्मत होने चाहिए तभी विकास में स्थायित्वता को प्राप्त किया जा सकता है।

दीपक कुमार उपाध्याय
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
रजिस्ट्रेशन नं० –XM/R/550/22

अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए कौटिल्य के अनुसार मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं मनुष्यों वाली भूमि को भी अर्थ कहा जाता है अतः अर्थ प्राप्ति में भूमि को सर्वश्रेष्ठ माना है। उस पृथ्वी को लाभ करने और पालन करने के उपायों को बताने वाले शास्त्र को ही अर्थशास्त्र से सम्बोधित किया है।[3] कौटिल्य इस बात को मानते हैं कि जीविका का आधार अर्थ ही है अतः जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं जीवन धारण हेतु भी मौलिक रूप से अर्थ की आवश्यकता है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्रीय विषय वस्तु का समावेशन अपने विविध अध्यायों में कभी स्वतन्त्र रूप से तो कभी प्रशासन तन्त्र की मर्यादा का उल्लेख करते हुए प्रस्तुत किया है। प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही राजा का हित है। अपने आपको प्रिय लगने वाले कार्यो को करना राजा का हित नहीं अपितु प्रजा के प्रिय कार्यो को करना ही राजा का अपना प्रिय हित है।

प्रजा सुखे सुखराजः प्रजानाः चहिते हितम्
मात्मप्रियं हितं राजः प्रजानां लू प्रियं हितम्[4]

कौटिल्य ने धन की विस्तृत व्याख्या की है वह धन के अन्तर्गत मुद्रा, वस्तु, प्राप्त किये जाने वाले वित्त, सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति, बहुमूल्य धातुओं, विनिमय साध्य तथा हस्तान्तरण योग्य वस्तुओं को सम्मिलित करते हैं। इन्होंने श्रम तथा वनों की उपज को भी धन माना। जो भी व्यक्ति धन तथा विद्या को प्राप्त करना चाहता है उसे कण और क्षण के महत्व को नहीं भूलना चाहिए। आपके अनुसार वही धन सही है जिसे उचित साधनों के द्वारा प्राप्त किया जाता है तथा इन्होंने धन को साधन माना साध्य नहीं।

कौटिल्य के अनुसार अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि, पशुपालन, उद्योग व्यापार, अर्थ, श्रम की प्रतिष्ठा, कीमतों का नियमन, सामाजिक सुरक्षा, पूर्ण रोजगार, कार्य विभाजन, मुनाफा नीति, साख पद्धति, मुद्रा कोष, बैकिंग, घाटे के बजट, ऋण, राजकीय व्यय, और कल्याणकारी राज्य आदि पर अति सूक्ष्म दृष्टि से प्रकाश डाला है उन्होंने व्यापार के विकास एवम् नियमन का विस्तृत विश्लेषण किया है।

आबादी नियन्त्रण के परिप्रेक्ष्य में भी कौटिल्य के द्वारा उपयोगिता का सिद्धान्त अपनाया जाता है उनका कहना है कि निम्न जाति के लोग जिस क्षेत्र में जितनी अधिक संख्या में रह रहे हैं वह उतना ही अधिक उन्नतिशील माना जायेगा। निम्नजाति के संख्यात्मक एवम् उनके द्वारा सेवाभाव का बहुत ही व्यवहारिक सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

राज्य के सफल संचालन में लोकवित की महत्वपूर्ण भूमिका है इसीलिए कौटिल्य ने अपनी रचना में लोकवित्त (करारोपण एवम् सार्वजनिक व्यय) की वृहद् व्याख्या की है। राज्य के लिए लोकवित्त के महत्व को दर्शाते हुए कौटिल्य कहते है ं "तया स्वपक्षं परपक्षं च वशीकरोति कोश दण्डाभ्याम्" अर्थात् वार्त्ता के अंगों द्वारा राजा कोष तथा दण्ड के माध्यम से स्वपक्ष तथा परपक्ष को वश में रखता है। कोष और दण्ड एक ही रथ के दो पहिये हैं।[5]

एक सम्प्रभुत्ता सम्पन्न समृद्ध तथा कल्याणकारी राज्य के लिए कोष की आवश्यकता होती है यह राज्य में वित्त की उपलब्धता पर ही निर्भर करता है किसी भी राज्य की वित्त नीति का मुख्य लक्ष्य प्रचलित सामाजिक व्यवस्था की रक्षा और संवर्धन ही है। इस मूल लक्ष्य मे ं बिना किसी प्रकार की बाधा डाले ही वित्त का इस तरह से परिचालन किया जाये कि अधिक से अधिक सामाजिक हित की प्राप्ति हो सके। इस तरह करारोपण के द्वारा आय प्राप्त करने का प्रावधान किया गया। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल रह कर अधिक सामाजिक हित करना ही अच्छी राज्य व्यवस्था है और इसी के अनुरूप वित्त नीति अपनाने की सलाह देते हुए कौटिल्य कहते हैं

प्रजा के सुख में ही राजा का हित निहित है केवल खुद को ठीक लगने वाले काम करने से राजा का हित नहीं होगा बल्कि उसका हित तो प्रजा को ठीक लगने वाले काम के सम्पादन में निहित है। सन्तुलित बजट नीति का समर्थन करते हुए कौटिल्य कहते हैं कि राजा को आय के अनुसार व्यय करना चाहिए आय से अधिक व्यय करने पर कुबेर का खजाना भी खाली हो जाता है। केवल आपातकाल में ही घाटे का बजट होना चाहिए। आपत्ति काल में भारी करारोपण के लिए राजा को प्रजा से स्नेह याचना करनी चाहिए।[6]

फिन्डले शिराज ने राजकीय व्यय के चार नियमों 1. लाभ का नियम, 2. मितव्ययिता का नियम, 3. अनुमोदन का नियम, 4. आधिक्य का नियम प्रतिपादित किया। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में मितव्ययिता तथा आधिक्य के नियम का विशेष समर्थन किया। राजा को ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिसमें धर्म और अर्थ की हानि हो। कौटिल्य ने जिन व्यय मदों की चर्चा की उन्हें चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। धार्मिक कार्य, राजा का निजी व्यय, प्रतिरक्षा, व्यापार, पशुपालन, जंगल संरक्षण।

वर्तमान संदर्भ में देखने पर कहा जा सकता है कि कौटिल्य के धार्मिक कार्य सम्बन्धी व्यय वर्तमान समय में सामाजिक कार्य सम्बन्धी व्ययों में तथा राजा के निजी व्यय को वर्तमान समय के प्रशासनिक व्यय में सम्मिलित किया जा सकता है।

कौटिल्य ने राजकीय व्यय को समयावधि और आर्थिक प्रभाव की दृष्टि से चार भागों में विभाजित किया है। 1. नित्य प्रतिदिन होने वाला व्यय 2. नित्योत्पादिक – नित्य से अधिक होने वाला व्यय 3. लाभ – लाभ में होने वाला व्यय 4.लाभोत्पादिक – लाभ से अधिक होने वाला व्यय । आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नित्य व्यय को चालू व्यय और लाभ व्यय को पूँजीगत व्यय कहते हैं।

कर की मात्रा उचित ओर उसका तरीका सुविधाजनक होना चाहिए–

पक्वं पक्वमिवारामात फलं राज्यादवाप्नुयात्

आत्मच्छेद क्यादामं वर्जयते कोष कारकम्[7]

अर्थात् बगीचे में जिस प्रकार कच्चे आम को छोड़कर पका आम तोड़ते हैं उसी प्रकार कर लगाते समय सरकार या राजा को मनुष्य की सहनशक्ति का विचार करके कर लगाना चाहिए। अतः कर करदान क्षमता के आधार पर लगाना चाहिए। कौटिल्य के अनुसार सामान्य अवस्था में जमींन की उपज का 1/6 भाग मालगुजारी के रूप में वसूल करना चाहिए।

आपातकाल में धन संग्रह करते समय प्रजा को दबाना पड़े तो दबाव के द्वारा भी धन संग्रह करना चाहिए लेकिन इस समय एक से अधिक कर नहीं लगाना चाहिए।[8] कौटिल्य के अनुसार जो वस्तुएँ राष्ट्र के लिये दुःख दायक और आर्थिक संवृद्धि में बाधक है जो निरर्थक और केवल शौक विलासिता के लिए हैं उन पर अधिक कर लगाकर आयात कम करें जिससे राष्ट्रीय आर्थिक संवृद्धि हो। आयात निर्यात पर भी शुल्क लगाना चाहिए।[9]

स्थल मार्ग और जलमार्ग व्यापार के इन दो मार्गो को वणिकपथ कहते हैं ये सब राजस्व के साधन हैं इसके अतिरिक्त मूल (अन्न, सब्जी) भाग (पैदावार का षष्टांश) व्यात्री (दण्ड रूप में प्राप्त धन) परिधर कर (बेवारिस की सम्पत्ति) रूविका (नमक कर) अत्यय (जुर्माना) आदि राजस्व के साधन हैं।[10] राजा को कोष में प्रजा से धनधान्य एकत्र करना चाहिए प्रजा राज्य को अन्न का छठा व्यापार का दसवॉ, पशुओं का पचासवॉ भाग तथा सोना दिया करेगी। यह कोष संकटकाल तथा शान्तिकाल में राजा के काम आयेगा। कृषि का बहुत अधिक महत्व है कृषक के हितों की रक्षा एवम् कृषि योग्य भूमि का कृषि कार्य के लिए पूरी तरह से उपयोग करने का प्रावधान था। कृषि को एक

पवित्र कार्य के रूप में महत्व प्राप्त था। चाणक्य कहते हैं बोने से पहले हर एक बीज को सुवर्ण से स्पर्श हुए जल में भिगोना चाहिए फिर बोते समय बीज को मुठ्ठी में लेकर यह मन्त्र पढ़ना चाहिए प्रजापति, सूर्य पुत्र और मेघ तुम्हारी सदैव हम वन्दना करते हैं। हे धरती माता हमारे बीजों एवम् अनाजों में सदैव वृद्धि होती रहे।[11]

कौटिल्य प्राचीन विचारक है लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचार आज भी प्रासंगिक है इन्होंने जिन आर्थिक विचारों का प्रतिपादन किया है उसका महत्व आज भी है। इन्होंने विदेशी व्यापार, करारोपण, सार्वजनिक व्यय, कृषि उद्योग के सम्बन्ध में प्रतिपादित मत आज भी उपयोगी है करारोपण की दर प्रगामी और कम होनी चाहिए अन्यथा करापवंचन को प्रोत्साहन मिलता है साथ ही कम कर दरें तुलनात्मक रूप में राज्य को अधिक आय प्रदान करने वाली होती है। कौटिल्य ने विदेशी व्यापार के महत्व को स्वीकार किया लेकिन विभिन्न नियन्त्रण के साथ ही यह लागू करना चाहिए तभी इससे लाभ प्राप्त हो सकेगा। कौटिल्य ने एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की बात कही है। निर्धन वृद्ध जनों तक लाभ पहुॅचाने की बात कही जिससे एक सशक्त मानव संसाधन का निर्माण हो सके। इस तरह कौटिल्य के प्राचीन अधिक विचार आज भी प्रासंगिक है अथवा इसकी प्रासंगिता समय निरपेक्ष है।

सार्वजनिक व्यय सम्बन्धी विचारों के सम्बन्ध में कौटिल्य का विचार है कि सरकार को उत्पादक कार्यो में व्यय करना चाहिए जिससे अर्थव्यवस्था में आय, रोजगार में वृद्धि होगी साथ ही कल्याणार्थ व्यय करना चाहिए जिससे निम्न और उपेक्षित लोगों को भी विकास की धारा में शामिल किया जा सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1. यू0एस0 स्मिथ, अरली हिस्ट्री आफ इन्डिया 1914 पेज 112–113
2. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, प्रथम अधिकरण
3. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अधिकरण–15, अध्याय–1, श्लोक–3
4. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 1/19/39
5. प्राचीन हिन्दू अर्थशास्त्र की रूपरेखा, नवराज चालिसे, पृष्ठ 188
6. कौटिल्य, अर्थशास्त्र 5/2
7. कौटिल्य, अर्थशास्त्र 5/90/2
8. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 2/5
9. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 2/21, 2/22
10. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 5/90/10
11. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अनुवादक वाचस्पति गैरोला, चौबीसवॉ अध्याय

12- डी0आर0 शामाशास्त्री Kautilyas Arthshastra

13- ds0Vh0 'kkg Ancient Foundations of Indian Economic thought

14- सन्तोष कुमार दास Economic History of Ancient India

15- के0वी0 रंगास्वामी Aspects of Ancient Indian Economic thought.